International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(5): 27-30
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 22-08-2026
Accepted: 10-09-2026
Publish : 12-09-2026

संध्या चौरसिया
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय,छतरपुर (मध्यप्रदेश)

डॉ. पुष्पा दुबे
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय,छतरपुर (मध्यप्रदेश)

Correspondence:
संध्या चौरसिया
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय,छतरपुर (मध्यप्रदेश)

बुंदेली साहित्यकारों का साहित्यिक अवदान: परंपरा, लोकसंस्कृति और आधुनिक चेतना के संदर्भ में

संध्या चौरसिया, डॉ. पुष्पा दुबे

सारांश

बुंदेलखंड भारतीय सांस्कृतिक भूगोल का ऐसा विशिष्ट क्षेत्र है जहाँ लोकजीवन, इतिहास, वीर-परंपरा, भक्ति, प्रेम, लोकविश्वास और सामाजिक चेतना ने साहित्य को निरंतर प्रभावित किया है। इस क्षेत्र की प्रमुख लोकभाषा बुंदेली ने अपनी दीर्घ साहित्यिक परंपरा के माध्यम से क्षेत्रीय अस्मिता को अभिव्यक्ति प्रदान की है। बुंदेली साहित्य की परंपरा में वीरगाथात्मक आख्यानों से लेकर भक्तिकाव्य, रीतिकाव्य, लोकगीत, फाग, चौकड़िया, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना तथा आधुनिक गद्य तक विविध साहित्यिक रूप विकसित हुए हैं। समकालीन साहित्यिक सर्वेक्षणों में जगनिक, आचार्य केशवदास, ईसुरी, गंगाधर व्यास, नर्मदा प्रसाद गुप्त, रामनारायण शर्मा, बलभद्र तिवारी, कन्हैयालाल 'कलश' तथा अन्य अनेक रचनाकारों को बुंदेली साहित्य के विकास से संबद्ध किया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में बुंदेली साहित्यकारों के साहित्यिक अवदान का ऐतिहासिक, भाषिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बुंदेली साहित्य केवल क्षेत्रीय भाषा में रचित साहित्य का संग्रह नहीं है, बल्कि यह बुंदेलखंड की सामूहिक स्मृति, लोकसंस्कृति, ऐतिहासिक चेतना और सामाजिक अनुभवों का सृजनात्मक दस्तावेज है। विशेष रूप से जगनिक की वीरगाथात्मक परंपरा, केशवदास की काव्यशास्त्रीय चेतना, अक्षर अनन्य की आध्यात्मिक दृष्टि, लाल कवि की ऐतिहासिक चेतना, ईसुरी की लोकाभिव्यक्ति, गंगाधर व्यास के लोकगायन तथा नर्मदा प्रसाद गुप्त और रामनारायण शर्मा के आधुनिक शोध एवं साहित्येतिहास-लेखन का विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द: बुंदेली साहित्य, बुंदेली भाषा, बुंदेलखंड, लोकसाहित्य, ईसुरी, गंगाधर व्यास, केशवदास, साहित्यिक अवदान, लोकसंस्कृति, साहित्येतिहास।

1. प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की विविधता उसकी भाषायी और क्षेत्रीय परंपराओं में निहित है। प्रत्येक क्षेत्र की लोकभाषा अपने समाज के अनुभवों, संघर्षों, उत्सवों, विश्वासों और सांस्कृतिक स्मृतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। बुंदेली भी ऐसी ही सशक्त लोकभाषा है, जिसका साहित्य बुंदेलखंड की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चेतना से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है।

बुंदेली साहित्य की परंपरा को केवल आधुनिक काल की लोककाव्य परंपरा तक सीमित नहीं किया जा सकता। साहित्यिक स्रोतों में इसकी परंपरा को जगनिक की आल्हा-गाथा से लेकर आधुनिक कहानी, उपन्यास और आलोचना तक विस्तृत माना गया है। आधुनिक साहित्यिक सर्वेक्षण बुंदेली के विकास में अनेक कवियों एवं साहित्यकारों का उल्लेख करते हैं।

बुंदेली साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें शौर्य और प्रेम, लोक और शास्त्र, इतिहास और स्मृति, भक्ति और सामाजिक चेतना एक-दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। यही समन्वय इसे भारतीय क्षेत्रीय साहित्य की महत्वपूर्ण परंपरा बनाता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बुंदेली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन करना।

2. प्रमुख बुंदेली साहित्यकारों के साहित्यिक अवदान का विश्लेषण करना।
3. बुंदेली साहित्य में लोक-संस्कृति और लोकजीवन की अभिव्यक्ति को रेखांकित करना।
4. बुंदेली साहित्य में वीर, भक्ति, श्रृंगार और सामाजिक चेतना का अध्ययन करना।
5. आधुनिक काल में बुंदेली गद्य के विकास का विश्लेषण करना।
6. बुंदेली भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन में साहित्यकारों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
7. बुंदेली साहित्य की वर्तमान साहित्यिक प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

3. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए बुंदेली साहित्य से संबंधित प्रकाशित ग्रंथों, साहित्येतिहास, लोकसाहित्य संबंधी अध्ययनों, आलोचनात्मक लेखों तथा उपलब्ध डिजिटल अभिलेखों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन में साहित्यकारों के मूल्यांकन के लिए निम्न आधार निर्धारित किए गए हैं—साहित्यिक विधा, भाषा एवं शैली,प्रमुख रचनाएँ,लोक-संस्कृति,सामाजिक चेतना,ऐतिहासिक चेतना,धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना,छंद एवं अलंकार,आधुनिक गद्य-विकास,भाषा-संरक्षण आदि है।

4. बुंदेली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुंदेली साहित्य का विकास बुंदेलखंड की राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ हुआ। चंदेल और बुंदेला काल की ऐतिहासिक स्मृतियों ने साहित्य में वीरता, स्वाभिमान और संघर्ष की चेतना को मजबूत किया। लोकसाहित्य में आल्हा-ऊदल जैसी वीरगाथाएँ इसी ऐतिहासिक वातावरण की सामूहिक स्मृति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

बुंदेली साहित्य की परंपरा में पद्य का विशेष महत्त्व रहा, किंतु आधुनिक काल में गद्य-विधाओं का भी पर्याप्त विकास हुआ। डॉ. रामनारायण शर्मा से संबंधित साहित्यिक सर्वेक्षण आधुनिक बुंदेली साहित्य को गद्यप्रधान काल के रूप में देखने की ओर संकेत करते हैं।

5. प्रमुख बुंदेली साहित्यकारों का साहित्यिक अवदान

5.1 जनकवि जगनिक: वीरगाथात्मक परंपरा

जगनिक को बुंदेली वीरगाथात्मक साहित्य की प्रारंभिक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाता है। *आल्हा-खण्ड* की परंपरा ने बुंदेलखंड के लोकमानस में वीरता, स्वाभिमान, युद्ध-कौशल और त्याग की भावना को स्थायी रूप दिया।

आल्हा की मौखिक परंपरा आज भी बुंदेलखंड की सांस्कृतिक स्मृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

जगनिक का महत्त्व केवल किसी एक काव्य-रचना तक सीमित नहीं है; उन्होंने लोकगाथा को सामूहिक ऐतिहासिक स्मृति का माध्यम बनाया।

5.2 आचार्य केशवदास: काव्यशास्त्रीय चेतना

केशवदास का संबंध ओरछा और बुंदेलखंड की साहित्यिक संस्कृति से अत्यंत गहरा है। वे मुख्यतः ब्रजभाषा के कवि हैं, इसलिए उन्हें विशुद्ध बुंदेली कवि कहना उचित नहीं होगा। किंतु बुंदेलखंड की दरबारी साहित्यिक परंपरा में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। *रसिकप्रिया*, *कविप्रिया*, *रामचंद्रिका* और *वीरसिंहदेवचरित* जैसी कृतियों ने हिंदी काव्यशास्त्र और रीतिकाव्य को महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।

उनके साहित्य में रस, अलंकार, नायिका-भेद, काव्य-शिल्प तथा राजाश्रय की संस्कृति का समन्वय दिखाई देता है।

5.3 अक्षर अनन्य: आध्यात्मिक चेतना

अक्षर अनन्य बुंदेलखंड की आध्यात्मिक और संत-काव्य परंपरा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनके साहित्य में आत्मज्ञान, गुरु-तत्त्व, वैराग्य, योग और आध्यात्मिक साधना की अभिव्यक्ति मिलती है।

उनकी साहित्यिक दृष्टि बाह्य आडंबर की अपेक्षा आंतरिक साधना को अधिक महत्त्व देती है। इस कारण उनका साहित्य बुंदेली क्षेत्र की आध्यात्मिक चेतना का प्रतिनिधि स्वर बन जाता है।

5.4 लाल कवि: ऐतिहासिक एवं वीर चेतना

लाल कवि की *छत्रप्रकाश* जैसी रचना बुंदेलखंड की ऐतिहासिक और वीर परंपरा के अध्ययन में विशेष महत्त्व रखती है।

छत्रसाल के जीवन, संघर्ष और वीरता को केंद्र में रखकर लाल कवि ने इतिहास और काव्य का समन्वय किया। यद्यपि आधुनिक इतिहासशास्त्रीय कसौटियों पर काव्यात्मक आख्यान को स्वतंत्र ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं माना जा सकता, फिर भी यह तत्कालीन सामूहिक स्मृति और वीर-चेतना का महत्वपूर्ण स्रोत है।

6. बोधा और ठाकुर: प्रेम तथा लोकानुभूति

बोधा रीतिमुक्त प्रेम-काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उनके काव्य में प्रेम की व्यक्तिगत अनुभूति और विरह की पीड़ा प्रमुख है।

ठाकुर का संबंध बुंदेलखंड के जैतपुर से माना जाता है और उनकी कविता में बुंदेली लोक-भाषिक मुहावरों तथा जीवनानुभवों का प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रकार बोधा और ठाकुर दोनों के यहाँ प्रेम की अनुभूति अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त होती है—बोधा के यहाँ व्यक्तिगत विरह और ठाकुर के यहाँ लोकजीवन से जुड़ी सहज प्रेम-दृष्टि।

7. पद्माकर: बुंदेलखंड की दरबारी साहित्यिक संस्कृति

पद्माकर मूलतः ब्रजभाषा के रीतिकालीन कवि हैं। अतः उन्हें विशुद्ध बुंदेली कवि न मानकर बुंदेलखंड की साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपरा से जुड़े ब्रजभाषा कवि के रूप में देखना अधिक उचित है।

पन्ना और बाँदा से उनके संबंध तथा *हिम्मतबहादुर विरुदावली* जैसी रचना बुंदेलखंड की वीर-सांस्कृतिक चेतना से उनके संबंध को स्पष्ट करती है।

उनकी *जगद्विनोद* में श्रृंगार और रस-विधान तथा *पद्माभरण* में अलंकार-चेतना का उत्कृष्ट रूप दिखाई देता है।

8. लोककवि ईसुरी: लोकजीवन की सशक्त अभिव्यक्ति

ईसुरी बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय लोककवियों में हैं। उनकी फागें बुंदेली लोकजीवन, प्रेम, प्रकृति, सामाजिक संबंध, नैतिकता और धार्मिक चेतना का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं।

ईसुरी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने सामान्य ग्रामीण जीवन को काव्य की प्रतिष्ठित विषय-वस्तु बनाया। उनकी फागों में बुंदेली भाषा अपनी स्वाभाविकता, लयात्मकता और लोकानुभूति के साथ उपस्थित होती है।

ईसुरी के साहित्य में—प्रेम, प्रकृति, मानवीय संबंध, लोकाचार, धार्मिक विश्वास, सामाजिक विसंगतियाँ एक साथ दिखाई देते हैं।इस दृष्टि से ईसुरी को **बुंदेली लोककाव्य की आत्मा का प्रतिनिधि कवि** कहा जा सकता है।

9. गंगाधर व्यास: लोकगायन और फाग परंपरा

गंगाधर व्यास ने ईसुरी की फाग परंपरा को आगे बढ़ाते हुए बुंदेली लोकगायन को व्यापक साहित्यिक स्वर दिया। उन्हें ईसुरी और ख्यालीराम के साथ बुंदेली की प्रमुख लोककाव्य परंपरा से जोड़ा जाता है।

उनकी फागों में प्रेम, प्रकृति, ग्रामीण जीवन, लोकसंस्कृति और सामाजिक अनुभवों का समन्वय मिलता है। उनका काव्य विशेष रूप से **गायनयोग्यता और लयात्मकता** के कारण लोकप्रिय हुआ।

उनकी भाषा में बुंदेली लोकजीवन के शब्द, मुहावरे और उपमान सहज रूप से प्रयुक्त होते हैं।

10. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त : लोकसाहित्य और साहित्येतिहास

आधुनिक बुंदेली साहित्य में डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त का योगदान शोधपरक और दस्तावेजी दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

उनकी प्रमुख कृतियों में *बुंदेली लोक साहित्य परंपरा और इतिहास*, *बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास*, *बुंदेलखंड का साहित्यिक इतिहास* तथा ईसुरी एवं आल्हा संबंधी संपादकीय कार्यों का उल्लेख मिलता है।

उन्होंने लोकगीत, लोकगाथा, लोकविश्वास, लोकाचार और लोकमूल्यों को बुंदेली संस्कृति के अध्ययन का आधार बनाया। उनकी लोकसंस्कृति संबंधी दृष्टि में संस्कृति को एक जीवित और निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा गया है।

11. डॉ. रामनारायण शर्मा : साहित्येतिहास और भाषा-कोश

डॉ. रामनारायण शर्मा आधुनिक बुंदेली साहित्य के इतिहासकार और भाषिक शोधकर्ता के रूप में उल्लेखनीय हैं। उनकी *बुंदेली भाषा साहित्य का इतिहास* तथा *बुंदेली भाषा कोश* जैसी कृतियाँ बुंदेली भाषा-साहित्य के व्यवस्थित अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण हैं।

आधुनिक साहित्यिक सर्वेक्षण उन्हें बुंदेली आलोचना के प्रमुख नामों में रखते हैं।

उनका योगदान विशेषतः तीन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण है—

1. बुंदेली साहित्य का इतिहास-लेखन,
2. बुंदेली शब्द-संपदा का संरक्षण,
3. आधुनिक बुंदेली गद्य का विकास।

इस प्रकार उन्होंने बुंदेली को केवल लोकाभिव्यक्ति की भाषा न मानकर गंभीर साहित्यिक और भाषिक अध्ययन की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

12. कन्हैयालाल 'कलश': आधुनिक बुंदेली चेतना

कन्हैयालाल 'कलश' आधुनिक बुंदेली साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में हैं। उनकी रचनाओं में बुंदेली भाषा, संस्कृति और सामाजिक जीवन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता दिखाई देती है।

बुंदेली आने अटके, *बुंदेली भाषा का व्याकरण* तथा *बुंदेली भाषा साहित्य और संस्कृति* जैसी कृतियों का उल्लेख आधुनिक बुंदेली साहित्य के संदर्भ में मिलता है।

उनका योगदान रचनात्मक साहित्य के साथ-साथ भाषा-संरक्षण और भाषिक चेतना के विकास में भी महत्त्वपूर्ण है।

13. डॉ. बलभद्र तिवारी : लोककाव्य और छंद परंपरा

डॉ. बलभद्र तिवारी ने बुंदेली लोककाव्य और उसकी छंद परंपरा के अध्ययन में उल्लेखनीय योगदान दिया। *बुंदेली लोक काव्य* तथा *बुंदेली काव्य परंपरा* जैसी कृतियों के माध्यम से उन्होंने बुंदेली के छंदात्मक और लोककाव्यात्मक स्वरूप को आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान की।

आधुनिक बुंदेली आलोचना में उनका नाम नर्मदा प्रसाद गुप्त और रामनारायण शर्मा के साथ प्रमुखता से लिया जाता है।

14. बुंदेली साहित्य में प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

बुंदेली साहित्यकारों के समग्र अध्ययन से निम्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं—

क्रम	साहित्यिक प्रवृत्ति	प्रमुख प्रतिनिधि
1	वीरगाथा	जगनिक, लाल कवि
2	काव्यशास्त्र	केशवदास
3	आध्यात्मिकता	अक्षर अनन्य
4	प्रेम-विरह	बोधा, ठाकुर
5	दरबारी काव्य	पद्माकर
6	लोककाव्य/फाग	ईसुरी
7	लोकगायन	गंगाधर व्यास
8	लोकसंस्कृति-अध्ययन	नर्मदा प्रसाद गुप्त
9	साहित्येतिहास	रामनारायण शर्मा
10	आधुनिक आलोचना/भाषा-अध्ययन	बलभद्र तिवारी, कन्हैयालाल 'कलश'
11	आधुनिक गद्य	रामनारायण शर्मा एवं समकालीन रचनाकार

यह वर्गीकरण स्थिर या पूर्ण सूची नहीं है, बल्कि अध्ययन की सुविधा के लिए प्रमुख प्रवृत्तियों का संकेतक है।

15. बुंदेली साहित्य में लोकसंस्कृति

बुंदेली साहित्य का सबसे विशिष्ट पक्ष उसका लोकजीवन से गहरा संबंध है। विवाह, जन्म, मृत्यु, कृषि, ऋतु, त्योहार, देवी-देवता, लोकदेवता, पारिवारिक संबंध, सामाजिक व्यवहार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था साहित्य में विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होते हैं।

नर्मदा प्रसाद गुप्त के लोकसंस्कृति संबंधी अध्ययन में बुंदेलखंड की संस्कृति को ऐतिहासिक विकास-क्रम में देखने का प्रयास किया गया है। उनके अध्ययन में वैदिक, मौर्य-शुंग, चंदेल, तोमर, बुंदेला और आधुनिक काल तक की सांस्कृतिक प्रक्रिया का विवेचन मिलता है।

16. बुंदेली साहित्य में सामाजिक चेतना

आधुनिक बुंदेली साहित्य में केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान समाज की समस्याओं का भी चित्रण मिलता है। ग्रामीण निर्धनता, सामाजिक असमानता, स्त्री की स्थिति, कृषि-संकट, बदलते पारिवारिक संबंध तथा आधुनिकता के प्रभाव जैसे प्रश्न समकालीन बुंदेली लेखन के विषय बने हैं।

इस प्रकार बुंदेली साहित्य लोकजीवन का रोमानी चित्रण मात्र न होकर सामाजिक यथार्थ का भी साहित्य है।

17. बुंदेली भाषा के संरक्षण में साहित्यकारों की भूमिका

बुंदेली भाषा के संरक्षण में साहित्यकारों का योगदान दो स्तरों पर देखा जा सकता है—

पहला—रचनात्मक संरक्षण:

कविता, फाग, कहानी, उपन्यास और नाटक के माध्यम से बुंदेली को जीवित रखना।

दूसरा—दस्तावेजी संरक्षण:

शब्दकोश, व्याकरण, साहित्येतिहास, लोकसाहित्य-संग्रह और आलोचनात्मक ग्रंथों के माध्यम से भाषा की संरचना को सुरक्षित करना।

नर्मदा प्रसाद गुप्त, रामनारायण शर्मा और बलभद्र तिवारी जैसे विद्वानों का योगदान इसी दूसरे क्षेत्र में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आधुनिक साहित्यिक सर्वेक्षण भी इन विद्वानों को बुंदेली आलोचना और साहित्य-अध्ययन के प्रमुख नामों में रखते हैं।

18. बुंदेली साहित्य की विशिष्टता

बुंदेली साहित्य की विशिष्टता निम्न आधारों पर निर्धारित की जा सकती है—

लोकमूलकता — साहित्य का आधार सामान्य जन का जीवन है।

वीरता — ऐतिहासिक संघर्षों और वीरगाथाओं की दीर्घ परंपरा।

लयात्मकता — फाग, चौकड़िया और लोकगीतों में संगीतात्मकता।

भाषिक स्वाभाविकता — लोकप्रचलित शब्दों और मुहावरों का सहज प्रयोग।

सांस्कृतिक बहुलता — लोकधर्म, भक्ति, सामाजिक संस्कार और उत्सवों का समन्वय।

आधुनिकता — आधुनिक काल में कहानी, उपन्यास, निबंध और आलोचना का विकास।

19. साहित्यिक अवदान का तुलनात्मक विश्लेषण

साहित्यकार	प्रमुख साहित्यिक क्षेत्र	केंद्रीय योगदान
जगनिक	वीरगाथा	शौर्य एवं सामूहिक स्मृति
केशवदास	रीतिकाव्य	काव्यशास्त्र एवं रस
अक्षर अनन्य	आध्यात्मिक काव्य	आत्मज्ञान एवं साधना
लाल कवि	ऐतिहासिक काव्य	वीर एवं ऐतिहासिक चेतना
बोधा	प्रेम-काव्य	विरह की अनुभूति
ठाकुर	प्रेम/लोकानुभूति	लोकभाषा एवं प्रेम
पद्माकर	ब्रजभाषा/दरबारी काव्य	श्रृंगार एवं वीरता
ईसुरी	फाग	लोकजीवन एवं प्रेम
गंगाधर व्यास	लोकगायन	फाग एवं लोकसंस्कृति
नर्मदा प्रसाद गुप्त	लोकसाहित्य	इतिहास एवं संस्कृति-अध्ययन
रामनारायण शर्मा	आधुनिक साहित्य	साहित्येतिहास एवं भाषा-अध्ययन
बलभद्र तिवारी	आलोचना	लोककाव्य एवं छंद-अध्ययन
कन्हैयालाल 'कलश'	आधुनिक बुंदेली	भाषा-संरक्षण एवं साहित्य

20. निष्कर्ष

बुंदेली साहित्य की विकास-यात्रा एक बहुआयामी साहित्यिक परंपरा का परिचय देती है। इसमें वीरगाथा की ओजस्विता, भक्ति की आध्यात्मिकता, रीतिकाव्य की सौंदर्य चेतना, लोकगीतों की सहजता, फाग की लयात्मकता तथा आधुनिक गद्य की सामाजिक संवेदना एक साथ विद्यमान हैं।

जगनिक से प्रारंभ होने वाली वीरगाथात्मक चेतना को लाल कवि ने ऐतिहासिक काव्य में विकसित किया; केशवदास ने काव्यशास्त्रीय और रीतिकाव्य परंपरा को समृद्ध किया; अक्षर अनन्य ने आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्ति दी; ईसुरी ने लोकजीवन को फाग के माध्यम से साहित्य की केंद्रीय विषय-वस्तु बनाया; गंगाधर व्यास ने लोकगायन की परंपरा को आगे बढ़ाया; जबकि नर्मदा प्रसाद गुप्त और रामनारायण शर्मा ने आधुनिक युग में बुंदेली साहित्य के इतिहास, भाषा और लोकसाहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन को दिशा प्रदान की। आधुनिक आलोचनात्मक सर्वेक्षण भी इन दोनों विद्वानों को बुंदेली आलोचना के प्रमुख स्तंभों में रखते हैं।

इस प्रकार बुंदेली साहित्यकारों का योगदान केवल साहित्यिक रचनाओं की संख्या तक सीमित नहीं है। उन्होंने बुंदेलखंड की भाषायी अस्मिता, सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक चेतना और लोकजीवन को शब्द प्रदान किए हैं। यही कारण है कि बुंदेली साहित्य क्षेत्रीय साहित्य होते हुए भी भारतीय लोक-साहित्य और हिंदी की व्यापक साहित्यिक परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

गुप्त, नर्मदा प्रसाद. (2001). बुंदेली लोक साहित्य परंपरा और इतिहास.

गुप्त, नर्मदा प्रसाद. (1995). बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन.

शर्मा, रामनारायण. (2001). बुंदेली भाषा साहित्य का इतिहास. बुंदेली साहित्य समिति, झाँसी.

तिवारी, बलभद्र सिंह. बुंदेली लोक काव्य.

तिवारी, बलभद्र सिंह. बुंदेली काव्य परंपरा.

दुबे, आरती. (2011). बुंदेली साहित्य का इतिहास.

हिन्दवी. (n.d.). पद्माकर. हिन्दवी.

बुंदेली झलक. (n.d.). बुंदेली भाषा और साहित्य का विकास एवं संरक्षण.

बुंदेली झलक. (n.d.). 21वीं सदी में विभिन्न क्षेत्रों में बुंदेली.